भूमिका

संप्रेषण की दृष्टि से वाक्य भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वाक्य निर्माण में 'शब्द' और 'शब्द- संबंध' की मुख्य भूमिका रहती है। जब किसी शब्द के साथ कोई संबंध-तत्व जुड़ता है तो वह शब्द , शब्द न रहकर 'पद' बन जाता है। और पदों के सह-संबंध से वाक्य का निर्माण होता है। किसी भी भाषा के शब्दों को व्याकरणिक विवेचन में विभिन्न शब्दभेदों में वर्गीकृत किया जाता है। अधिकांश व्याकरणों में शब्दभेदों के वर्गीकरण में संज्ञा के बाद दूसरा शब्दभेद सर्वनाम है। वाक्य में सर्वनाम का प्रयोग इसलिए किया जाता है कि संज्ञा की पुनरुक्ति न हो। भोजपुरी में सर्वनाम 'मूल' और रूपसाधित (Root and Inflected) दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं। भोजपुरी में भी आठ शब्दभेदों की बात की गई है- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक। इन्हें 'पद' बनने में व्याकरणिक कोटियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अत: शब्द स्तर के व्याकरणिक अध्ययन में शब्दभेद के साथ-साथ व्याकरणिक कोटियों का भी अध्ययन किया जाता है। व्याकरणिक कोटियों के अंतर्गत लिंग, वचन, पुरुष, काल, पक्ष, वृत्ति आदि आते हैं।

भोजपुरी का उद्गम 'मागधी' अपभ्रंश से हुआ है किंतु इस पर अर्धमागधी से निकली हुई अवधी का पर्याप्त प्रभाव है। इसके व्याकरणिक नियम और शब्दकोश हिंदी से अधिकांश मिलते-जुलते हैं। पद एवं पदबंधों के निर्माण में परसर्गों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो वाक्य को सार्थक बनाने में अपना योगदान करते हैं। परसर्ग वह स्वतंत्र इकाई है जिनका अपना कोई अर्थ नहीं होता है लेकिन संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर संबंध व्यक्त करता है।

भोजपुरी वाक्यों में परसर्गों की जितनी महत्वपूर्ण भूमिका है उनके प्रयोग में उतनी विविधता भी है। परसर्गों के द्वारा मुख्यतः कारक संबंधों को व्यक्त किया जाता है। इनकी एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि किसी एक परसर्ग का प्रयोग एक से अधिक अर्थ की अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने में किया जाता है; जैसे- **पहसुल से तरकारी काटू।** साधन के रूप में- (करण का अर्थ) तो समयसूचक के साथ- **ऊ कहिए से नइखन आवऽत।** (समय बोध) है। इसके अलावा एक ही अभिव्यक्ति को एक से अधिक परसर्गों की सहायता से व्यक्त कर सकते हैं। इसी प्रकार सभी मूल परसर्गों का विविध प्रकार से प्रयोग किया जाता है।

भोजपुरी में परसर्ग को हिंदी की भाँति संज्ञा से अलग लिखा जाता है; जैसे- **छत पऽ** (छत पर), **मोहन के** (मोहन को) आदि, परंतु सर्वनाम के साथ जोड़कर लिखा जाता है; जैसे- **इन्हनींके** (इनको), **तोहके** (तुमको), **हमसे** (मुझसे) आदि। भोजपुरी में मुख्य रूप से (0, के , से, में, पऽ और खातिर) मूल परसर्ग हैं। कुछ मूल परसर्गों को एक साथ संयुक्त

परसर्ग के रूप में भी प्रयोग किया जाता है तथा साथ ही निपात के साथ जोड़कर परसर्गीय पदबंध के रूप में भी प्रयोग होता है।

हिंदी में भूतकाल में सकर्मक क्रिया के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग कर्ता के तुरंत बाद किया जाता है जबकि भोजपुरी में कर्ता के लिए कोई परसर्ग प्रयुक्त नहीं होता है। इस प्रकार परसर्गों के प्रयोग में अनेक विविधताएँ होती हैं और यह स्थिति अन्य भाषाओं में भी पाई जाती है। यदि हम भोजपुरी सर्वनाम और परसर्ग के योग को देखें तो विभिन्न रूप रूप प्राप्त होते हैं। उदाहारण के लिए-

हम+0= **हम**, हम+के= **हमके**, हम+के= **हमरा के**, हम+से= **हमसे**, हम+से=**हमरा से**, हम+आर= **हमार**, हम+में= **हमरा में**, हम+में + भी = **हमरो में**, हम+पऽ = **हमरा पऽ**, हम+पऽ + भी = **हमरो पऽ**, हम+खातिर =**हमरा खातिर**, हम+खातिर + भी = **हमरो खातिर।**

इस उदाहरण में भोजपुरी के केवल एक सर्वनाम उत्तम पुरुष 'हम' के साथ विभिन्न परसर्गों के योग से बनने वाले रूपों को दिखाया गया है। इस तरह की स्थिति दूसरे सर्वनाम और परसर्गों के योग के साथ भी पाई जाती है।

हिंदी की तरह भोजपुरी में भी निपात की विशिष्ट भूमिका होती है जिसका प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के साथ जोड़कर प्रयोग किया जाता है इसके कारण निश्चित शब्द, शब्द-समुदाय या पूरे वाक्य को अतिरिक्त प्रभाव प्राप्त होता है। इस शोध कार्य में मुख्य रूप से निपात के रूप में 'ही, भी, तो' को लिया गया है। भोजपुरी में सर्वनाम के साथ निपात के जुड़ने से उनका रूप प्रभावित होता है; जैसे-

सर्वनाम हम (उत्तम पुरुष) (मैं)		
परसर्ग	**हम**	**+ही**
0	हम	हमहीं, हमरे
के	हमके, हमरा के	हमहीं के, हमरे के
से	हमसे, हमरा से	हमहीं से, हमरे से
क/आर/कर	हमार	हमहीं, हमरे
में	हमरा में	हमहीं में, हमरे में
पऽ	हमरा पऽ	हमहीं पऽ, हमरे पऽ

खातिर	हमरा खातिर	हमहीं खातिर, हमरे खातिर

इसी प्रकार **'+भी'** और **'+तो'** के भी रूप बनते हैं। इन सभी को लघु शोध-प्रबंध में देखा जा सकता है।

प्रस्तुत शोधकार्य **"भोजपुरी सर्वनाम का रूपवैज्ञानिक अध्ययन"** में भोजपुरी सर्वनाम और परसर्ग योग, भोजपुरी सर्वनाम और निपात योग तथा इसके निषेधात्मक प्रयोग के आधार को समझाने का प्रयास किया गया है। यह रचना एवं प्रयोग को समझने, तुलनात्मक अध्ययन, भोजपुरी व्याकरण निर्माण एवं शिक्षण में तथा मशीन संसाधन हेतु टूल्स बनाए जाने में सहायक होगा।

लघु शोध-प्रबंध की रूपरेखा-

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को कुल चार अध्यायों में विभक्त किया गया है। इन अध्यायों में प्रमुख बिंदुओं को व्यवस्थित करते हुए इस प्रकार समाविष्ट किया गया है :

1. प्रथम अध्याय **'सर्वनाम : स्वरूप एवं परिचय'** में कुल तीन उपशीर्षक हैं। प्रथम उपशीर्षक **'शब्द-भेद : संक्षिप्त परिचय' में शब्दभेद जैसे-** संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक का संक्षिप्त परिचय दिया गया है तथा विकार के आधार पर शब्दभेदों का वर्गीकरण किया गया है। द्वितीय उपशीर्षक **'सर्वनाम : परिभाषा एवं स्वरूप'** में सर्वनाम की परिभाषा और स्वरूप को बताया गया है। अंतिम उपशीर्षक **'भोजपुरी सर्वनाम : प्रकार** के अंतर्गत भोजपुरी सर्वनाम के प्रकार को दर्शाया गया है।

2. द्वितीय अध्याय में भोजपुरी सर्वनाम और परसर्ग के योग से बनने वाली रूपों को बताया गया है जिसका शीर्षक **' भोजपुरी में सर्वनाम और परसर्ग'** है। इस अध्याय को तीन उपशीर्षकों में विभाजित किया गया है। प्रथम उपशीर्षक **'भोजपुरी सर्वनाम'** है। द्वितीय उपशीर्षक **'परसर्ग : परिभाषा एवं स्वरूप '** में विद्वानों द्वारा दी गई परसर्ग की परिभाषा और स्वरूप को बताते हुए उसके वर्गीकरण को भी बताया गया है। तृतीय उपशीर्षक **'भोजपुरी सर्वनाम और परसर्ग योग'** में भोजपुरी सर्वनाम में किस परसर्ग के जुड़ने से कौन से रूप बनते हैं इसके बारे में बताया गया है। इसके अंतर्गत **पुरुषवाचक सर्वनाम और परसर्ग**, **निजवाचक सर्वनाम** और **परसर्ग, निश्चयवाचक सर्वनाम और परसर्ग, अनिश्चयवाचक सर्वनाम और परसर्ग, प्रश्न वाचक सर्वनाम और परसर्ग एवं संबंधवाचक सर्वनाम और परसर्ग योग को** तालिकाओं के माध्यम से **बताया गया है।**

3. प्रस्तुत शोधकार्य का तृतीय अध्याय **'भोजपुरी में सर्वनाम और निपात '** है; जिसके चार उपशीर्षक हैं। प्रथम उपशीर्षक **'निपात परिभाषा एवं स्वरूप '** है। अगला उपशीर्षक **'निपात और अव्यय '** है। अगले उपशीर्षक **'भोजपुरी सर्वनाम और निपात'** में सर्वनाम के साथ निपात के योग से बने रूपों को दिखाया गया है जिनमें **पुरुषवाचक सर्वनाम और निपात** , **निजवाचक सर्वनाम** और **निपात, निश्चयवाचक सर्वनाम और निपात, अनिश्चयवाचक सर्वनाम और निपात, प्रश्न वाचक सर्वनाम और निपात एवं संबंधवाचक सर्वनाम और निपात के योग** से बनने वाली रूपों को तालिकाओं के द्वारा दर्शाया गया है।

4. चतुर्थ अध्याय का शीर्षक **'भोजपुरी सर्वनाम और क्रिया रूप '** है; जिसके चार उपशीर्षक हैं। प्रथम उपशीर्षक **'क्रिया की परिभाषा और प्रकार'** है जिसमें क्रिया की परिभाषा और स्वरूप को बताते हुए इसका संक्षिप्त वर्गीकरण करते हुए प्रकारों की चर्चा की गई हैं। उपशीर्षक **'काल: परिभाषा एवं प्रकार'** के अंतर्गत विद्वानों द्वारा दी गई काल की परिभाषा एवं उसके प्रकारों को 'अनिश्चित कालीन', 'निरंतर' एवं 'पूर्णकालिक' की दृष्टि से बताया गया है। अगला उपशीर्षक '**पक्ष'** है। तथा अंतिम उपशीर्षक ' **भोजपुरी सर्वनाम और निषेध रूप' में निषेध के रूप में** अनिश्चित कालीन', **निषेध के रूप में** निरंतर एवं **निषेध के रूप में** पूर्णकालिक को तालिकाओं के माध्यम से सर्वनामों के अनुसार बनने वाले क्रिया रूपों का वर्णन किया गया है।

'उपसंहार' में प्रस्तुत शोधकार्य के महत्वपूर्ण बिंदुओं की संक्षिप्त विवेचना की गई है। इसके साथ ही साथ उपयोगिता एवं सीमाओं को रेखांकित करते हुए अंत में इस शोध से संबंधित संभावनाओं को स्थान दिया गया है।

शोध-प्रबंध के अंत में **'संदर्भ ग्रंथ-सूची'** के अंतर्गत भोजपुरी, हिंदी की उन पुस्तकों का उल्लेख किया गया है जिनसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस शोधकार्य को पूरा करने में सहायता ली गई है। साथ ही शोधकार्य में उपयोगी कुछ प्रमुख वेबसाइटों का भी उल्लेख किया गया है।

साहित्यिक पुनरवलोकन-

इस शोध कार्य को संपन्न करने में विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री की सहायता ली गई हैं कुछ प्रमुख हिंदी और भोजपुरी की पुस्तकों का अध्ययन किया गया है जिनका विवरण इस प्रकार है-

❖ ओझा, त्रिभुवन. (1987). ***प्रमुख बिहारी बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन***. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन

इस पुस्तक में भोजपुरी भाषा की बोलियों का परिचय , रूपगत विशेषता और बोलियों में लिखित साहित्यिक रचना के साथ-साथ बोलियों का ध्वनि ग्रामिक अध्ययन तथा शब्द- विचार एवं शब्द भेद संबंधी बिंदुओं को बताया गया है। इस पुस्तक में व्याकरणिक कोटियों लिंग , वचन, कारक : प्राचीन कारक विभक्तियों के बारे में बताया गया है तथा इस पुस्तक में सर्वनाम का परिचय देते हुए उस पर पड़ने वाले प्रभाव (काल) और विश्लेषण एवं उसके प्रकार के साथ-साथ विशेषण शब्द निर्माण की प्रक्रिया की बात की गई है।

❖ गुरु, कामताप्रसाद. (2009). ***हिंदी व्याकरण***. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

इस पुस्तक में दूसरा एवं तीसरा भाग महत्वपूर्ण हैं जिसमें सर्वनाम एवं अव्यय को विस्तार से बताया गया है जो मेरे शोध विषय के लिए उपयोगी हैं।

❖ तिवारी, शकुंतला.(2009). ***भोजपुरी की रूपग्रामिक संरचना***. कानपुर: विकास प्रकाशन

इस पुस्तक में भोजपुरी भाषा के उद्भव एवं विकास के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की चर्चा की गई है तथा भोजपुरी भाषाओं से संबंधित रूप , रूपिम (मुक्त एवं बद्ध) एवं रूपिमीय विश्लेषण की पद्धतियों का भी वर्णन किया गया है जैसे- अर्थ पद्धति , रूप पद्धति आदि। इस पुस्तक में भोजपुरी भाषा के पदविभाग , जैसे- संज्ञा , सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, निपात, एवं अव्यय एवं व्याकरणिक कोटियाँ आदि की चर्चा की गई है।

❖ पांडेय, अनिल कुमार. (2010). ***हिंदी संरचना के विविध पक्ष***. दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.

इस पुस्तक में 'कारक प्रकरण' के नाम से एक अध्याय है जिसमें कारक और परसर्ग के बारे में चर्चा की गई है जो परसर्ग का वाक्य में प्रकार्य व संरचना को समझने में सहायक है।

❖ तरुण, हरिवंश. (2010). ***मानक हिंदी व्याकरण और रचना***. दिल्ली. प्रकाशन संस्थान

इस पुस्तक में कारक चिह्नों के प्रयोग के बारे में जानकारी दी गई है जो परसर्गों के प्रयोग को समझने में सहायक है।